समर्पण



लहू से जिनके धरा के प्राण पलते आ रहे,
मरण से जिनके अनेकों मर्त्य जीवन पा रहे;
क़ब्र की हर ईंट जिनकी करुण-बलि-गाथा कहे,
सांस में तेरे दिगंबरि! उन्हीं की स्मृति बहे!

'चिन्मय'